सीखने वालों का आकलन : आन्ध्र प्रदेश स्कूल चुनाव अध्ययन

Jhfuokl lq y q ckjhxq yk



आकलन शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं के प्रभाव को आँकने के लिए मापन का एक उपकरण है। इन पहलुओं में निश्चित विषयों में संज्ञानात्मक उपलब्धि की तरह बच्चों के सीखने के मूल्यांकन से लेकर सिखाने-सीखने की प्रक्रिया में शिक्षकों की निपुणता तक, तथा विभिन्न प्रकार के स्कूलों से लेकर शिक्षण के माध्यमों तक, बच्चों के प्रदर्शन पर पड़ने वाले प्रभाव, सभी शामिल हैं। आकलन एक निदानात्मक परीक्षण (टैस्ट) होता है जो वास्तव में बच्चों को अपने में सुधार करने में मदद करता है। सामान्य परीक्षाओं, जो केवल यह पता करने की कोशिश करती हैं कि बच्चा कितना जानता है (या उसने कितना याद किया है), के विपरीत, आकलन यह मापता है कि विद्यार्थियों ने वास्तव में कितनी अच्छी तरह से अवधारणाओं को सीखा है, और उसके बारे में उन्हें विस्तृत फीडबैक दिया जाता है ताकि उन्हें सुधार करने में सहायता मिले। अन्य परीक्षाओं से आकलन कई प्रकार से भिन्न होता है,जैसे-

- इसमें रोचक प्रश्न होते हैं जिनके लिए विचार करना, न कि सिर्फ याददाश्त से जानकारी को निकालना या फिर से स्मरण करना, आवश्यक होता है।
- यह प्रत्येक कौशल में मजबूत पक्षों और कमजोरियों को विशेष रूप से दर्शाते हुए विस्तृत फीडबैक प्रदान करता है।
- यह विद्यार्थी के प्रदर्शन की स्कूल में उसके साथियों तथा मण्डल और जिले के समकक्ष विद्यार्थियों से तुलना करने के लिए मानदण्ड प्रदान करता है।

इस आलेख में छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों के योगात्मक आकलनों की शृंखलाओं से प्राप्त हुई जानकारी तथा आँकड़ों का उपयोग आन्ध्र प्रदेश स्कूल चुनाव अध्ययन में शामिल छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक उपलब्धियों पर शिक्षा के माध्यम से पड़ने वाले प्रभाव को प्रस्तुत करने के लिए किया गया है। इस अध्ययन में, 2008 से 2011 तक प्रत्येक अकादमिक वर्ष के अन्त में तीन वर्षों तक तेलुगु, गणित तथा अँग्रेजी विषयों में योगात्मक आकलनों के दो दौर, निचले सिरे की रेखा (लोअर एंड लाइन) तथा ऊपरी सिरे की रेखा (हायर एंड लाइन) आकलनों के रूप में, आयोजित किए गए। ये आकलन TIMSS रूपरेखा के आधार पर ऐजुकेशनल इनीशिएटिव्स (ई.आई.) द्वारा निर्मित किए गए थे।

1. लोअर एंड लाइन आकलनों का उद्देश्य पिछली कक्षा की निर्धारित क्षमताओं में विद्यार्थियों के सीखने तथा सीखी गई अवधारणाओं को वर्तमान कक्षा में आगे बढ़ा सकने की उनकी योग्यता का मूल्यांकन करना होता है। इस तरह के आकलन से हम समझ पाते हैं कि क्या विद्यार्थियों को अवधारणात्मक ढंग से पढ़ाया गया था या उन्होंने तेलुगु तथा गणित में केवल रटकर सीखने का अभ्यास किया था।
2. हायर एंड लाइन के आकलनों का उद्देश्य वर्तमान वर्ष की कक्षा की निर्धारित क्षमताओं में, कठिनाई के उपयुक्त स्तर के साथ तेलुगु, अँग्रेजी और गणित में विद्यार्थियों के सीखने का मूल्यांकन करना होता है।

पृष्ठभूमि

आन्ध्र प्रदेश स्कूल चुनाव एक प्रायोगिक शोध अध्ययन है जो आन्ध्र प्रदेश सरकार के साथ अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा आन्ध्र प्रदेश के तीन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले 5 जिलों (विशाखापटनम, पूर्व गोदावरी, कडपा, मेडक और निजामाबाद) में किया जा रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने की उपलब्धियों पर उनके

द्वारा चुने गए स्कूल तथा उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के सापेक्षिक प्रभावों को ज्ञात करना है। इस अध्ययन ने सरकारी स्कूलों में से नमूने के तौर पर बेतरतीब ढंग से चुने गए विद्यार्थियों को उनके गाँवों में उनकी पसन्द के निजी स्कूलों में पढ़ाई करने के लिए आर्थिक रूप से समर्थ होने के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान कीं और फिर उनके प्रदर्शन की तुलना सरकारी स्कूलों में उनके समकक्ष विद्यार्थियों से की।

सन्दर्भ

मातृभाषा में शैक्षिक रूप से सीखना वर्तमान की शक्ति तथा भविष्य की उज्जवल आशा होती है। शिक्षा का माध्यम शिक्षकों और विद्यार्थियों को समझ में आने लायक होना चाहिए। उसे उनको विषयवस्तु के निर्धारित स्तर को हासिल करने में सक्षम भी बनाना चाहिए ताकि वे चुने गए माध्यम में सन्देशों को प्रेषित करना तथा प्राप्त करना, दोनों कर सकें। ज्यादातर शिक्षा विशेषज्ञ यही अनुशंसा करते हैं कि प्रायमरी स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में बच्चे की मातृभाषा को ही अपनाया जाना चाहिए। जुबैर (1993) ने प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाए जाने का प्रस्ताव रखते हुए तर्क दिया था कि, "आदर्श स्थिति में अपनी खुद की भाषा के माहौल में जी रहे बच्चे की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाना चाहिए और दूसरी भाषा अर्थात अँग्रेजी को एक विषय की तरह अपनाया/पढ़ाया जाना चाहिए।"

बहस

वास्तव में शिक्षा का माध्यम शिक्षकों, शिक्षाशास्त्रियों तथा पालकों के बीच बड़ी बहस का विषय है। शिक्षकों तथा अकादमिक विद्वानों के बहुमत का कहना है कि शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी नहीं होना चाहिए बल्कि उसे प्रारम्भ से ही एक विषय की तरह पढ़ाया जाना चाहिए। परन्तु, ग्रामीण क्षेत्रों में भी, माता-पिता कहते हैं कि सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी होना चाहिए। लेकिन जैसा कि हम अच्छी तरह जानते हैं कि अँग्रेजी व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। (शिक्षा के माध्यम तथा एक विषय के रूप में) इसकी जड़ें औपनिवेशिक भारत में जमीं, जब ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के लिए शैक्षिक नीति बनाते समय स्पष्ट रूप से दो अलग-अलग मत उभर कर सामने आए। तब विवाद पूर्वीय विचारधारा तथा पाश्चात्य विचारधारा वालों के बीच में था (अहमद, 1997)।

इस आलेख का उद्देश्य

छात्रवृत्ति पाने वाले ऐसे विद्यार्थियों की, जिन्होंने निजी स्कूलों में अँग्रेजी तथा तेलुगु माध्यमों से शिक्षा पाई है, संज्ञानात्मक उपलब्धियों की तेलुगु, गणित तथा अँग्रेजी में आकलनों की एक शृंखला आयोजित करके तुलना करना।

विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर शिक्षा के माध्यम का प्रभाव

इस आलेख का लक्ष्य प्राथमिक स्तर पर तेलुगु, गणित तथा अँग्रेजी विषयों में छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों की योगात्मक आकलनों के द्वारा ज्ञात की गई संज्ञानात्मक उपलब्धियों पर शिक्षा के माध्यमों के प्रभावों का विश्लेषण करना है। कुल मिलाकर यह पाया गया कि करीब-करीब सभी मामलों में तेलुगु माध्यम स्कूलों के छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन अँग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों से बेहतर था। सिर्फ एक मामले में यह फर्क था; अँग्रेजी माध्यम के स्कूलों के विद्यार्थी केवल अँग्रेजी में ज्यादा अच्छे थे। यहाँ दी गई तालिका, आन्ध्र प्रदेश स्कूल चुनाव अध्ययन में, दोनों शिक्षा माध्यमों में योग्यता-आधारित सीखने की उपलब्धियों में छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन दर्शाती है।

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने में, विशेष रूप से कम उम्र में, पढ़ाने की प्रक्रिया में शिक्षकों को तथा समझने और सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सहायता मिलेगी। प्राथमिक स्तर पर यह आवश्यक है चाहे वह निजी स्कूलों में हो या सरकारी स्कूलों में हो। आन्ध्र प्रदेश स्कूल चुनाव अध्ययन में छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों (1980) ने दोनों तरह के शिक्षा माध्यमों के स्कूलों को चुना और उन्होंने स्कूल का चुनाव करने के अपने विकल्प का इस्तेमाल किया। छात्रवृत्ति वाले जिन विद्यार्थियों ने शिक्षा का तेलुगु माध्यम चुना उन्होंने

छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन		लोअर एंड लाइन		हायर एंड लाइन		
आकलन का वर्ष	माध्यम	तेलुगु	गणित	तेलुगु	गणित	अँग्रेजी
2008–2009	तेलुगु	53.29	44.53	41.52	37.13	38.45
	अँग्रेजी	39.77	26.81	32.87	25.77	37.13
2009–2010	तेलुगु	44.71	36.53	43.74	34.75	43.68
	अँग्रेजी	42.13	29.20	41.96	31.69	41.75
2010–2011	तेलुगु	54.81	47.13	33.44	22.46	41.63
	अँग्रेजी	51.61	46.21	29.69	18.69	52.20

तेलुगु, गणित तथा अँग्रेजी में उत्तरोत्तर वर्षों में ज्यादा अच्छा प्रदर्शन किया, जबकि छात्रवृत्ति पाने वाले जिन विद्यार्थियों ने अँग्रेजी माध्यम को चुना उन्होंने केवल एक वर्ष सिर्फ अँग्रेजी में बेहतर प्रदर्शन किया।

इसका कारण शायद यह है कि छात्रवृत्ति मिलने तथा स्कूल का चुनाव करने से पहले उन सभी विद्यार्थियों ने कक्षा 1 में सरकारी स्कूलों में तेलुगु माध्यम का अनुभव किया हुआ था। इसलिए तेलुगु माध्यम चुनने वाले विद्यार्थियों ने निजी स्कूलों में भी शिक्षा के उसी माध्यम को जारी रखा और भाषा की बाधाओं के बिना उन्होंने अपना सीखना तथा अच्छा प्रदर्शन करना भी बरकरार रखा। जिन विद्यार्थियों ने अँग्रेजी को चुना, उनके पास निजी स्कूलों में जाने के समय शिक्षा के माध्यम या विषय के रूप में अँग्रेजी का पर्याप्त ज्ञान या अनुभव नहीं था।

निजी स्कूलों में छात्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों के घुल-मिल जाने में एक अन्य समाजशास्त्रीय समस्या सहपाठियों के साथ सम्बन्ध बनाना और विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों के बीच सीखना है। स्कूली शिक्षा के दौरान पढ़ाई करने और सीखने में साथियों के साथ सम्बन्ध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अँग्रेजी माध्यम के निजी स्कूलों में छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों की तुलना में छात्रवृत्ति नहीं पाने वाले विद्यार्थी अपेक्षाकृत सम्पन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं। इस अध्ययन ने दर्शाया कि उनका छात्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों के साथ लगभग कभी भी कक्षाओं में एकीकरण नहीं हुआ, इसलिए ऐसे दोनों समूहों के विद्यार्थियों के बीच में साथियों जैसी मिल-जुलकर सीखने या सम्बन्ध रखने वाली कोई बात नहीं रही। वहीं दूसरी ओर, तेलुगु माध्यम के निजी स्कूलों में छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों के सीखने में और शिक्षा में सुधार आना तथा उनका बेहतर प्रदर्शन करना जारी रहा, क्योंकि तेलुगु माध्यम के निजी स्कूलों में छात्रवृत्ति नहीं पाने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों के समान ही होती है। इसीलिए इन स्कूलों में सभी विद्यार्थियों के बीच में अच्छा एकीकरण तथा मेलमिलाप हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप तेलुगु माध्यम के स्कूलों में साथियों के साथ सम्बन्ध और सीखना बेहतर रहा है।

सार-संक्षेप तथा निष्कर्ष

तेलुगु माध्यम के स्कूलों में छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों ने सीखने के आकलनों के सभी विषयों में अपना सुधार करना और बेहतर प्रदर्शन करना जारी रखा है। दूसरी ओर, गणित तथा अन्य विषयों को अँग्रेजी में सीखने की वजह से उन स्कूलों के विद्यार्थी सीखने के आकलनों की दृष्टि से घाटे में रहे। निश्चित ही शिक्षा के माध्यम की तरह अँग्रेजी के इस्तेमाल ने कम से कम अँग्रेजी में उनके अच्छे प्रदर्शन में उनकी सहायता की, जो छात्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक योगदान है। यहाँ यह कहना उचित होगा कि प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से होना चाहिए ताकि विद्यार्थी विषयों को अच्छी तरह आत्मसात कर सकें। शिक्षा के माध्यम में बीच सत्र में बदलाव करना न केवल उन्हें अस्त-व्यस्त करने वाला होगा, बल्कि

अनुत्पादक भी होगा। शिक्षा के माध्यम के रूप में तेलुगु का उपयोग छात्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों के गणित और अँग्रेजी सहित अन्य विषयों में प्रदर्शन में सुधार करने में योगदान देगा।

- आकलनों ने दर्शाया कि छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों ने, इससे प्रभावित हुए बिना कि उन्होंने किन स्कूलों में या शिक्षा के किस माध्यम में अध्ययन किया, अवधारणाओं को अच्छी तरह से समझा।
- शिक्षकों ने आकलनों के प्रश्नपत्रों को अपने स्कूल के टैस्टों के लिए मॉडल प्रश्नपत्रों की तरह इस्तेमाल किया।
- तेलुगु माध्यम के छात्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों ने बाद के वर्षों में सीखने के सभी आकलनों में तेलुगु तथा गणित में अच्छा प्रदर्शन किया है।
- सरकारी स्कूलों के छात्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों की शिक्षा का माध्यम बदलने से उन्होंने गणित तथा पर्यावरण विज्ञान में जो कुछ सीखा था उसे उनको अनसीखा करना पड़ा। उन्हें सभी विषयों को अँग्रेजी माध्यम में फिर से सीखने की जरूरत पड़ी।
- छात्रवृत्ति वाले जिन विद्यार्थियों ने निजी स्कूलों की निचली कक्षाओं में प्रवेश पाया, उन्हें गणित तथा अँग्रेजी की बुनियादी जानकारी हासिल करने में कुछ समय लगा, पर उन्होंने बाद के वर्षों में क्षमता-आधारित सीखने के आकलनों में अच्छा प्रदर्शन किया।

श्रीनिवासुलु *वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की ऐजुकेशन लीडरशिप एण्ड मैनेजमेंट टीम के सदस्य हैं। पिछले 13 सालों में वे शिक्षा में शोध, स्वास्थ्य तथा सुधार सेवाओं, जल प्रबन्धन तथा बाल श्रम उन्मूलन के प्रयासों में संलग्न रहे हैं, जिनमें से उनके 8 वर्ष फाउण्डेशन में काम करते हुए गुजरे हैं। उनके पास हैदराबाद की उस्मानिया यूनिवर्सिटी से सोशल वर्क में स्नातकोत्तर उपाधि तथा मनोविज्ञान में एम. फिल. की उपाधि है। उनसे* bsrinu@azimpremjifoundation.org *पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: सत्येन्द्र त्रिपाठी*